Media Coordinator's Office
Jamia Millia Islamia

August 8, 2016

Press Release

Jamia Millia Islamia to organize screening of film *Godaan* based on Munshi Premchand's novel

To celebrate 80 years of legendary writer Munshi Premchand's novel *Godaan*, Jamia Millia Islamia is organizing screening of a film based on the novel on Wednesday, August 10, 2016.

Film *Godaan* is an adaptation of the novel with screen play and direction by noted writer, poet, lyricist and director Gulzar and will be screened at 2.30 PM at the university's Dr. M.A. Ansari Auditorium which has a seating capacity of 500.

Prof. Sabiha A. Zaidi, Director of Jamia's Premchand Archives and Literary Centre which is organizing the event said that Prof. M. Asaduddin, a renowned literature & Dean, Faculty of Humanities & Languages of the university will introduce the film. The entry to the screening will be on first-cum-first serve basis.

Godaan is the last complete novel of Munshi Premchand, whose real name was Dhanpat Rai, jointly published first in Hindi by Saraswati Press, Benaras and Hindi Granth Ratnakar Karyalaya, Bombay in 1936 and later after his death in Urdu in 1939 by Maktaba Jamia Limited, publishing wing of Jamia Millia Islamia (JMI).

The Urdu version of *Godaan* was translated by renowned Urdu poet Munshi Iqbal Verma Sehar Hathgami. Two decades later, in 1957 it was translated into English by Jai Ratan and P. Lal and again in 1968 by Gordon C. Roadarmel which came to be considered a classic in itself. The novel has been translated in most major languages of India and in French, German and Russian languages.

There has been a debate regarding most of Premchand's publications and so was with *Godaan*. However, the available corpus of letters have been useful in demolishing even the minimal controversy regarding the year of publication of *Godaan* and it is clearly established as May 1936. A letter of Munshi Premchand written on March 19, 1935 to Hasamuddin Gauri makes it clear that Premchand had made up his mind that the Urdu version of his novel would be published from Jamia Maktaba.

The popularity of the novel rests on its characters which were representative of millions of India's poor and oppressed people; and in Premchand's elaboration of the problems of growing deceit and high-handedness of the Zamindars. The struggle for existence of the common man in dismal situation with pressing norms of dignity prescribed by the affluent social and religious authorities and the natural responses of the oppressed to situations beyond their control lend a universal appeal to this novel.

Premchand's stories have been prescribed in schools and college syllabi and studied at all levels both in formal curricula as well as informally across India and beyond. His stories have also been widely taken up for theatrical adaptations. The multifarious medium of cinema has been applied to this very popular novel twice. It was first produced as a Hindi film starring Rajkumar, Mehmood and Shashikala in 1963 and later in 2004, it was produced by Doordarshan as part of a 26-episode TV series 'Tahreer-e-Premchand' with screenplay and direction by the distinguished writer Gulzar.

Dr. Saima Saeed
Hony. Deputy Media Coordinator
Jamia Millia Islamia

8 अगस्त, 2016

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया में मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास पर आधारित फिल्म गोदान के प्रदर्शन का आयोजन

महान लेखक मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास गोदान के 80 साल का जश्न मनाने के लिए, जामिया मिल्लिया इस्लामिया बुधवार, 10 अगस्त, 2016 को उनके उपन्यास पर आधारित एक फिल्म की स्क्रीनिंग का आयोजन कर रहा है।

फिल्म गोदान स्क्रीन प्ले के साथ उपन्यास का रूपांतरण है और विख्यात लेखक, कवि, गीतकार और निदेशक गुलजार द्वारा निर्देशित है जिसका प्रदर्शन विश्वविद्यालय के डॉ.एम.ए. अंसारी सभागार में 2.30 बजे से किया जाएगा जिसमें 500 लोगों के बैठने की क्षमता है।

कार्यक्रम के आयोजक, जामिया प्रेमचंद अभिलेखागार एवं साहित्यिक केन्द्र की निदेशक प्रो. सबीहा ए. ज़ैदी ने कहा कि प्रो. एम. असद्दुदीन एक प्रसिद्ध साहित्यकार एवं विश्वविद्यालय के मानविकी एवं भाषा के संकाय डीन, फिल्म का परिचय देंगे। फिल्म प्रदर्शनी में प्रवेश पहले आओ–पहले पाओ के आधार पर दिया जाएगा।

गोदान मुंशी प्रेमचंद का अंतिम पूरा उपन्यास है, जिनका असली नाम धनपत राय था, पहली बार सरस्वती प्रेस, बनारस और हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बंबई द्वारा संयुक्त रूप से 1936 में हिन्दी में प्रकाशित हुआ और बाद में उर्दू में मकतबा जामिया लिमिटेड, प्रकाशन विंग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जामिइ) द्वारा 1939 में उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित किया गया।

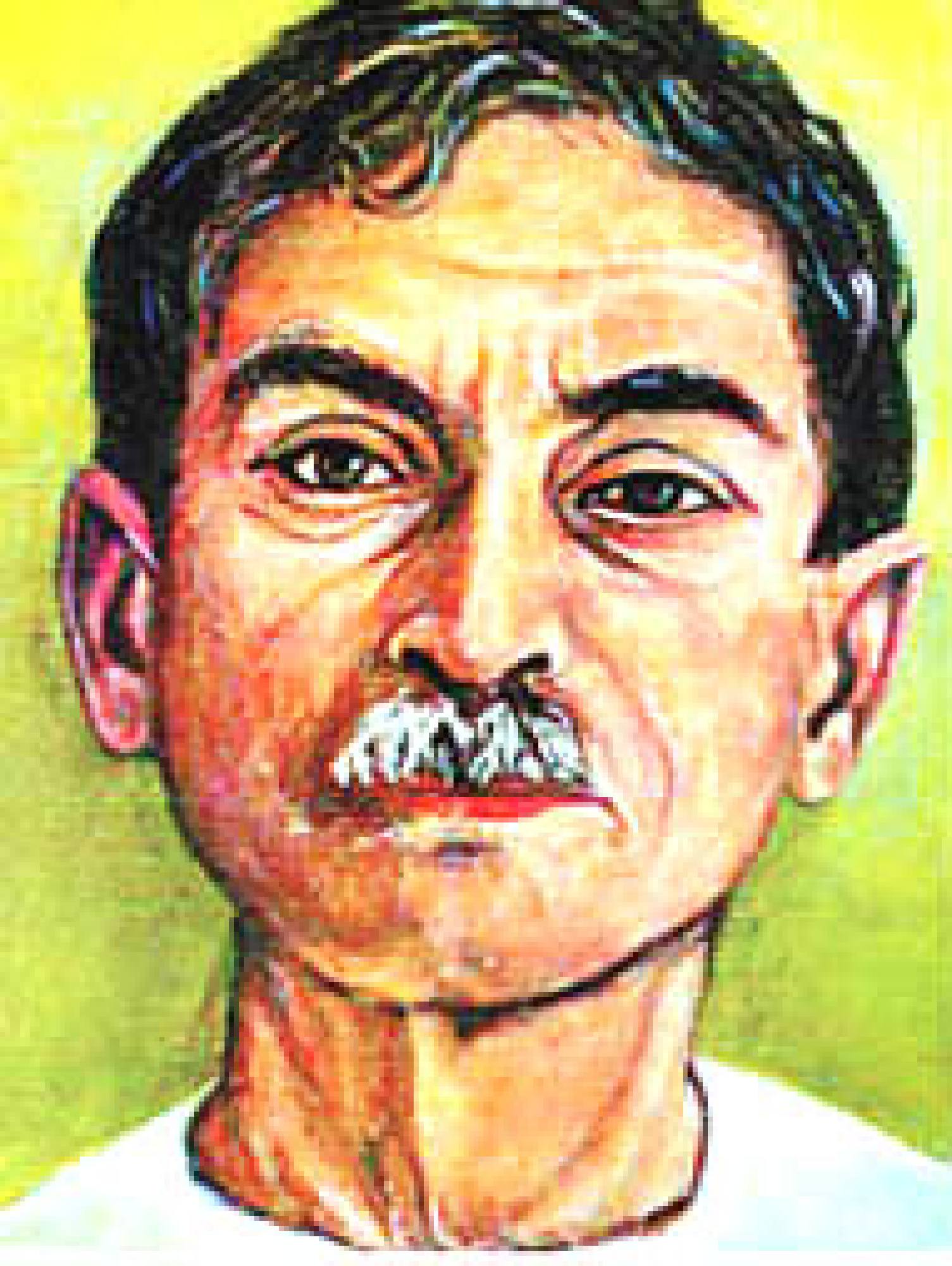
गोदान का उर्दू संस्करण का अनुवाद प्रसिद्ध उर्दू कवि मुंशी इक़बाल वर्मा सेहर हथगामी द्वारा किया गया है। दो दशक बाद, 1957 में यह अंग्रेजी में जय रतन और पी. लाल द्वारा और फिर से 1968 में जॉर्डन सी. रोडरमेल, जाकि अपने आप में एक क्लासिक माने जाते हैं, उनके द्वारा अनुवाद किया गया था। उपन्यास का भारत की प्रमुख भाषाओं और फ्रेंच, जर्मन तथा रूसी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

प्रेमचंद के अधिकतर प्रकाशनों के बारे में एक बहस रही है और ऐसा ही गोदान के साथ रहा। हालांकि, उपलब्ध पत्र कोष ने प्रकाशन वर्ष से संबंधित विवाद को खत्म करने में उपयोगी काम किया और अब यह स्पष्ट रूप से मई 1936 के रूप में स्थापित हो गया है। हसामुद्दीन गौरी के लिए 19 मार्च 1935 को लिखे प्रेमचंद के एक पत्र से यह स्पष्ट है कि प्रेमचंद स्वयं चाहते थे कि उपन्यास के उर्दू संस्करण को जामिया मकतबा द्वारा प्रकाशित किया जाए।

उपन्यास की लोकप्रियता इस पर टिकी हुई है कि इसके पात्र भारत के लाखों गरीब और दीन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं और प्रेमचंद जमींदारों की मनमानी से बढ़ रही समस्याओं का विस्तार से वर्णन करते हैं। निराशाजनक स्थिति में आम आदमी के अस्तित्व के संघर्ष को दबाने के लिए संपन्न सामाजिक और धार्मिक ठेकेदारों के निर्धारित मानदंडों के प्रति गरीब और दीन लोगों की स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं द्वारा उनके नियंत्रण से परे परिस्थितियों के लिए एक सार्वभौमिक अपील इस उपन्यास में है।

प्रेमचंद की कहानियों को स्कूलों और कॉलेज के पाठ्यक्रम में निर्धारित किया गया है, दोनों में औपचारिक पाठ्यक्रम के रूप में और अनौपचारिक तौर पर पूरे भारत में सभी स्तरों पर अध्ययन किया जाता है। उनकी कहानियों का व्यापक रूप से नाट्य रूपांतर भी किया गया है। इसे पहली बार 1963 में राजकुमार, महमूद और शशि कला अभिनीत एक हिंदी फिल्म के रूप में और बाद में 2004 में निर्मित किया गया, इसका एक 26 एपिसोड का टीवी सीरियल तहरीर–ए–प्रेमचंद, प्रतिष्ठित लेखक गुलज़ार द्वारा पटकथा और निर्देशन के साथ दूरदर्शन द्वारा निर्मित किया गया।

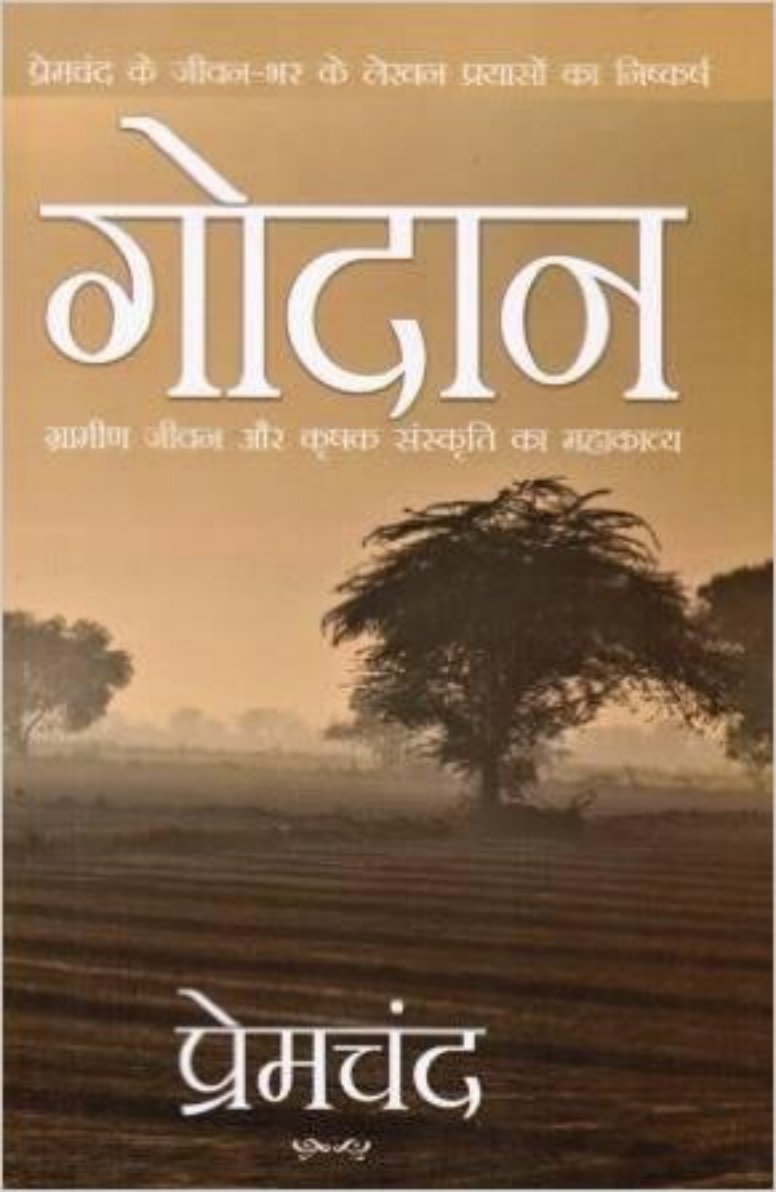
डॉ. साइमा सईद
मानद उप मीडिया समन्वयक
जामिया मिल्लिया इस्लामिया



प्रेमचंद के जीवन-भर के लेखन प्रयासों का निष्कर्ष

गोदान

ग्रामीण जीवन और कृषक संस्कृति का महाकाव्य



प्रेमचंद